इससे कम वार्षिक वर्षा और अधिकतम तापक्रम 49 डिग्री सेन्टीग्रेड तक वाले क्षेत्रों में बहुत अच्छी प्रकार बढ़ता है। यह ज्यादा ठण्ड सहन नहीं कर पाता है। नीम विभिन्न प्रकार की भूमि, यहाँ तक कि ऊसर भूमि में भी उग सकता है। नीम कटी-फटी भूमि में भली-भाँति नहीं उगता है।

नीम में मार्च से मई तक फूल आते हैं और फल जून से अगस्त तक पकते हैं। पकने पर फल पीलापन लिये हुए हरे होते हैं। साधारणतया नीम प्रकाशपेक्षी (लाइट डिमान्डर) है, परन्तु युवावस्था में कटीली झाड़ियों के बीच से ऊपर निकल आने की क्षमता है। प्रारम्भिक अवस्था में यह पाला को सहन नहीं कर पाता। नीम ज्यादा नमी भी सहन नहीं कर पाता लेकिन अनुर्वरक, शुष्क व ऊसर भूमि में पनप सकता है। यह कापिस करता है और मूल प्ररोह (रूट सकर्स) उत्पन्न करता है।

नीम को पौधशालाओं में आसानी से उगाया जा सकता है, लेकिन वनीकरण में प्रयोग के लिये पिंडी वाले पौधों के सापेक्ष सीधी बुआई से ज्यादा सफलता मिलती है। जुलाई में बीज के पूरी तरह पक जाने पर सीधे खेत में एकत्र करना चाहिए और एक सप्ताह के भीतर बो देना चाहिए। बुवाई से पूर्व बीज को किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं है। एक क्यारी से दूसरी क्यारी के बीच लगभग 50 सेंटीमीटर एक बीज से दूसरे बीज के बीच लगभग 5 सेंटीमीटर व एक लाइन के बीच 10 सेंटीमीटर की दूरी होनी चाहिए। बीज बोने से पहले गूदा साफ कर लेना चाहिए। बीज को चूहे व कीड़ों आदि से क्षति पहुंचने की आशंका रहती है इसलिये बीज को हल्की मिट्टी से ढक देना चाहिए और मिट्टी को पपड़ी से बचाने के लिये ढीला रखना चाहिए।

नीम शोभाकार व छायाकार वृक्ष है। विभिन्न अंग– पत्तियाँ, फूल, फल, छाल, प्रकाष्ठ और शाखाएं औशधीय गुणों से युक्त होने के कारण नीम 'गाँव के वैद्य' के नाम से प्रसिद्ध है।

Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Department of Environment, Forests & Climate Change, Government of Uttar Pradesh

East Wing, III Floor, A-Block, PICUP Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226 010, U.P., INDIA

Phone : +91 522 4006746, +91 2306491, E-mail: upstatebiodiversityboard@gmail.com

Website: www.upsbdb.org

© Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Year of Publication : 2021

नीम (अजैडिरेक्टा इण्डिका)

15

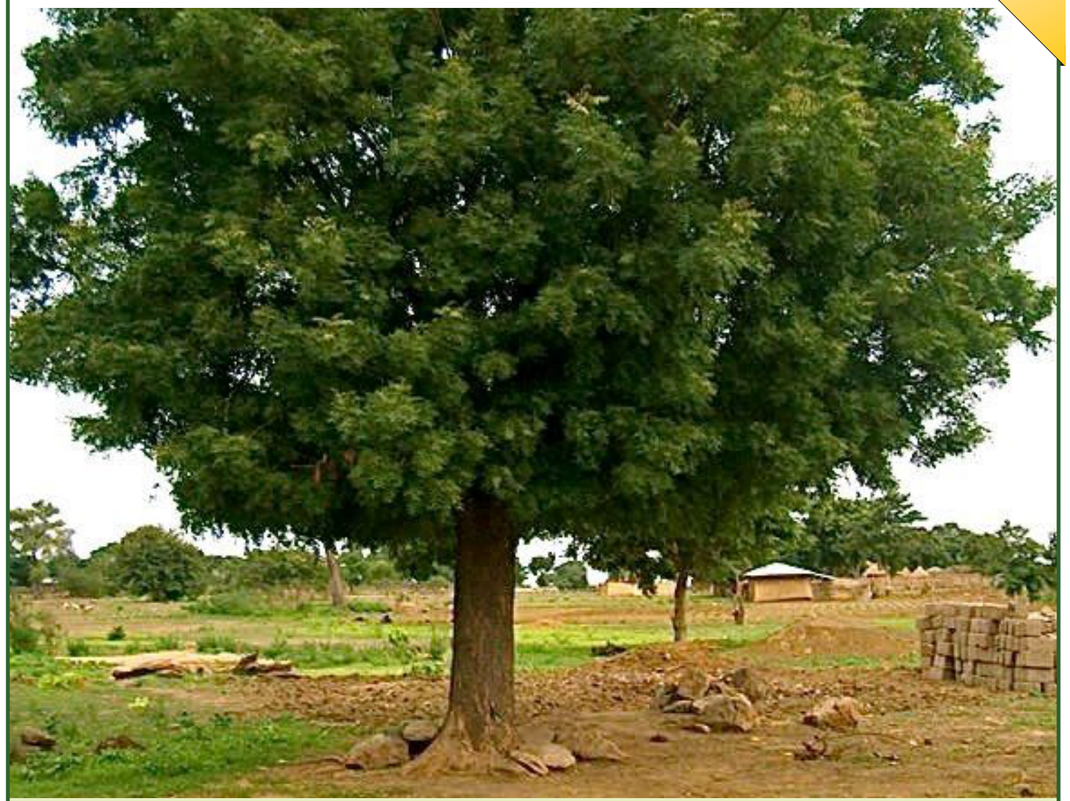

नीम मध्यम से बड़ी ऊंचाई (सामान्यतया 12 मीटर से 15 मीटर व कहीं-कहीं 25 मीटर तक) वाला एक सदाबहार वृक्ष है, लेकिन अधिक सूखे वाले क्षेत्र में थोड़े समय के लिए इसकी पत्तियाँ गिर जाती हैं। इसका छत्र घना और गोल होता है। इसकी पत्तियाँ चिकनी और छाल हल्की होती है। नीम की लकड़ी कठोर, टिकाऊ और लाल रंग की होती है।

भारतवर्ष में यह वृक्ष प्राकृतिक रूप से सूखाग्रस्त क्षेत्रों के खुले झाड़ीनुमा वनों में पाया जाता है। शिवालिक की पहाड़ियों व दक्षिण में कर्नाटक के वनों में भी यह प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। सूखी और मध्यम सूखी जलवायु में सड़कों के किनारे छाया के लिए या शोभाकार वृक्ष के रूप में लगाये जाने के लिये नीम बहुत ही उपयुक्त प्रजाति है। यह 500 मिलीमीटर या

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण
National Biodiversity Authority, India
2003

जहाँ है हरियाली ।
वहाँ है खुशहाली ॥

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
U.P. STATE BIODIVERSITY BOARD